प्रो॰ (डॉ॰) सोहन राज तातेड़ का जीवन चरित्र

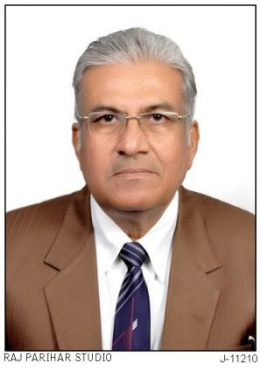

सोहन राज तातेड़ का जन्म स्वतन्त्रता पूर्व राजस्थान राज्य के रेगिस्तानी बाड़मेर जिले के एक छोटे से गाँव कानोड़ में एक मध्यमवर्गीय जैन परिवार में 5 जुलाई 1947 को हुआ था। बाड़मेर पाकिस्तान की सीमा से सटा हुआ है और वहाँ जीवन बहुत कठिन है। गर्मियों के दिनों में रेतीले तूफान वहाँ की रोजमर्रा की घटना है। मध्यमवर्गीय परिवारों में जन्म लेने वालों के लिये ऐसे विषम स्थान पर जीवन–यापन करना आसान काम नहीं है। उन्हें जीवन में कुछ उपलब्धि प्राप्त करने के लिये कठिन संघर्ष करना पड़ता है। एक प्रसिद्ध कहावत है कि "एक दृढ़–निश्चयी व्यक्ति न केवल अपना, बल्कि अपने परिवार और समुदाय का भाग्य भी बदल सकता है।" यह कहावत सोहन राज तातेड़ पर शत–प्रतिशत सही उतरती है।

उनके पिता श्री मुल्तान मल घरेलू उपयोग की वस्तुयें बेचने वाले दूकानदार थे और कानोड़ में उनकी स्वयं की एक दूकान थी। उनकी माता श्रीमती चम्पा देवी एक सरल–हृदय गृहिणी थी और वे अपने परिवार के प्रति पूर्णतया समर्पित थी। श्री मुल्तान मल और श्रीमती चम्पा देवी दोनों को ही शिक्षा प्राप्त करने का अवसर नहीं मिला, क्योंकि उन दिनों कानोड़ गाँव में कोई विद्यालय ही नहीं था। गाँव में बिजली और सड़कें जैसी मूलभूत सुविधायें भी नहीं थी और पीने के पानी की बड़ी भारी कमी थी। वहाँ के लोग परम्परागत तरीकों से वर्षा जल को संरक्षित करते थे और पूरे वर्ष भर तक पीने और अन्य कार्यों के लिये उसी जल का प्रयोग करते थे।

उनके माता–पिता अत्यन्त सीधे–सादे, सरल हृदय, ईमानदार और धार्मिक प्रवृत्ति के थे। उनके पिता श्री मुल्तान मल ने ये गुण अपने पिता श्री हेमराज और अपनी माता से विरासत में प्राप्त किये थे। सोहन राज तातेड़ के माता–पिता नम्रता और सादगी की साक्षात् प्रतिमूर्ति थे और वे अपने बच्चों की शिक्षा के प्रति अत्यन्त सचेष्ठ और जागरूक थे। वे दोनों ही अत्यन्त परिश्रमी और धार्मिक स्वभाव के थे। सोहनराज तातेड़ ने भी ये गुण अपने माता–पिता से विरासत में प्राप्त किये। उनके माता–पिता जैन धर्म की श्वेताम्बर शाखा के तेरापन्थ सम्प्रदाय के अनुयायी थे, जो लगभग दो सौ पचास वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु द्वारा प्रारम्भ किया गया था। इस सम्प्रदाय के अनुयायी धर्म संघ में अगाध श्रद्धा रखते हैं और आचार्य इस सम्प्रदाय के प्रमुख होते हैं। इसके वर्तमान आचार्य श्री महाश्रमण हैं। सोहन राज तातेड़ पाँच भाइयों और चार बहिनों में तीसरे नम्बर की सन्तान हैं।

बचपन से ही सोहन राज तातेड़ अपने सभी भाई–बहिनों से अधिक बुद्धिमान और अध्ययनशील है। प्रारम्भ से ही वे अत्यन्त परिश्रमी, सीधे–सरल, विनम्र और मृदु–भाषी रहे हैं और विरक्ति का जीवन बिताते रहे हैं। इनकी दूसरी कक्षा तक की प्रारम्भिक शिक्षा कानोड़ गाँव के ही विद्यालय में हुई। वह विद्यालय

केवल दूसरी कक्षा तक ही था। इसलिये उन्हें किसी दूसरे विद्यालय में भेजना पड़ा। उनके माता–पिता ने उन्हें अपने दूसरे निवास स्थान बाड़मेर जिले के जसोल गाँव में भेज दिया, जहाँ उन्हें राजकीय माध्यमिक स्कूल में प्रवेश मिल गया। इस विद्यालय में उन्होंने 8 वीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त की। यह विद्यालय उस क्षेत्र के सबसे अच्छे माध्यमिक स्कूलों में से एक था। वे अपने माता–पिता के साथ रहकर ही शिक्षा प्राप्त कर रहे थे। जसोल के माध्यमिक स्कूल में वे विद्यार्थी संघ के अध्यक्ष /सचिव रहे। वहाँ से वर्ष 1961 में पूरे विद्यालय में प्रथम स्थान से 8 वीं कक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात् उच्च अध्ययन के लिये उन्हें जोधपुर भेजा गया। जोधपुर सम्भागीय मुख्यालय था और अच्छी शैक्षणिक सुविधाओं के लिये जाना जाता था।

जोधपुर में उन्होंने महेश उच्च माध्यमिक विद्यालय में प्रवेश लिया जहाँ से उन्होंने कक्षा 9 से 11 तक की शिक्षा प्राप्त की। यहाँ भी वे वर्ष 1961 से 1964 तक छात्र संघ के अध्यक्ष/सचिव रहे। वे हमेशा से एक मेधावी और सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले (topper) विद्यार्थी रहे हैं। महेश उच्च माध्यमिक विद्यालय में अध्ययन करते हुए वे कक्षा 9, 10, और 11 में प्रथम स्थान पर रहे और वर्ष 1961 में उच्च माध्यमिक परीक्षा में सम्पूर्ण राजस्थान में शीर्ष स्थान पर रहे और इस प्रकार उन्होंने न केवल अपने परिवार, बल्कि अपने गाँव और समाज को भी ख्याति दिलवाई। इतना सब कुछ होने पर भी उनका जीवन आसान नहीं था, बल्कि बहुत कठिन और कांटों से भरा हुआ था।

उच्च माध्यमिक परीक्षा में सम्पूर्ण राजस्थान में शीर्षस्थ स्थान पर रहने के कारण उन्हें वर्ष 1964 में एम॰ बी॰ एम॰ इज्जीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर में प्रवेश मिल गया और उन्होंने अपने लिये मैकेनिकल इंजीनियरिंग शाखा चुनी। वर्ष 1965 उनके लिये एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। इसी वर्ष में उनका विवाह लक्ष्मी नामक एक 10 वीं कक्षा उत्तीर्ण लड़की से हो गया। श्रीमती लक्ष्मी देवी सोहन राज तातेड़ के लिये सर्वाधिक आदर्श जीवन–संगिनी साबित हुई। वे भी बचपन से ही विरक्ति का जीवन जी रही हैं। सोहन राज तातेड़ और श्रीमती लक्ष्मी देवी दोनों ही धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति हैं और उन्हें यौन–सुख प्राप्त करने में कोई रूचि नहीं है। विवाह होने पर इस नव–दम्पत्ति ने अपने विवाह के पहले ही दिन से स्वेच्छा से दो वर्ष तक (1965 से 1967 तक) ब्रह्मचर्य व्रत्त का पालन करने की प्रतिज्ञा कर ली। एक नव–विवाहित जोड़े के लिये ऐसी कठिन प्रतिज्ञा का पालन करना आसान नहीं था। यौन–सुख प्राप्त करने की इच्छा स्वाभाविक और प्राकृतिक है, परन्तु उन्होंने अपने भविष्य के लिये इस कठिन व्रत्त का बखूबी पालन किया।

एक प्रसिद्ध कहावत है कि "जहाँ चाह होती है, वहाँ राह निकल ही आती है।" सोहन राज तातेड़ और उनकी पत्नी वर्ष 1965 से 1967 तक तेरापंथ सम्प्रदाय के मुनि श्री सम्पतमल जी स्वामी के घनिष्ठ सम्पर्क में रहे, जिन्होंने सोहन राज तातेड़ को प्राकृत एवं संस्कृत में लिखित प्रतिक्रमण, 25 बोल, "जैन सिद्धान्त दीपिका' और 'मनोनुशासनम्' नामक ग्रन्थों को कण्ठस्थ करवाया। उन्होंने श्री सोहन राज तातेड़ और श्रीमती लक्ष्मी देवी को एक जोड़े (Pair) के रूप में जैन मुनि दीक्षा लेने के लिये भी प्रेरित किया।

पति–पत्नी दोनों ही ऐसा करने के लिये बहुत उत्सुक थे, परन्तु ऐसा हो नहीं सका, क्योंकि अभी तक उनके चरित्र मोहनीय कर्म का पूरा क्षयोपशयम नहीं हुआ था।

वर्ष 1965 से 1969 तक श्री सोहन राज अपना अध्ययन जारी रखने और अपने चार भाई बहिनों के अध्ययन का खर्च वहन करने के लिये अपने साथी विद्यार्थियों को प्राइवेट ट्यूशन पढ़ाया करते थे। इस अवधि के दौरान उन्होंने अपने सैकड़ों साथी विद्यार्थियों को उच्च गुणवत्ता वाली स्कूली शिक्षा प्राप्त करने और उसे जारी रखने के लिये प्रेरित किया। चूँकि श्री तातेड़ अत्यन्त प्रतिभाशाली और बुद्धिमान विद्यार्थी थे और उनके मन में सीखने और ज्ञान प्राप्त करने की बड़ी भारी ललक थी। अतः उन्होंने वर्ष 1969 में बी॰ ई॰ (मैकेनिकल) डिग्री ऑनर्स से प्राप्त कर ली। यहाँ भी उन्होंने अपना पिछला रिकार्ड कायम रखा और वे न केवल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए बल्कि एम॰ बी॰ एम॰ इंजीनियरिंग कॉलेज, जोधपुर की बी॰ई॰ (मैकेनिकल) परीक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया और इस प्रकार वे पूर्णतया प्रशिक्षित इंजीनियर बन गये।

श्री तातेड़ तेरापन्थ धर्मसंघ के प्रति सम्पूर्ण हृदय से समर्पित हैं और उनके मन में आचार्य श्री महाश्रमणजी के प्रति अगाध श्रद्धा है। उन्होंने हमेशा गुरूदेव तुलसी और आचार्य श्री महाप्रज्ञ के दिखाये पथ का अनुसरण किया। वे बहुत कम आयु में ही वर्ष 1965 से 1970 तक सरदारपुरा, जोधपुर की जैन श्वेताम्बर तेरापन्थी सभा के सचिव रहे।

वर्ष 1970 उनके जीवन का एक निर्णायक वर्ष साबित हुआ। इस वर्ष उनका राजस्थान राज्य सेवा आयोग द्वारा चयन किया गया और उनको राजस्थान सरकार के जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग (Public Helath Engineering Department) में सहायक इंजीनियर के पद पर नियुक्त कर दिया गया। राज्य सेवा में रहते हुए भी और आगे अध्ययन करने के लिये उन्होंने एम॰ ई॰ (जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी) उत्तीर्ण किया और उसमें भी प्रथम स्थान प्राप्त किया। चूँकि वे अपने कार्यों में बहुत मुस्तैद, प्रामाणिक और सच्चे रहे, अतः राजस्थान सरकार के द्वारा चार बार उनका सम्मान किया गया, जिसका विवरण निम्न प्रकार हैः

(1) वर्ष 1970 में मात्र 90 दिनों में मथानिया से जोधपुर तक पानी लाने के लिये।

(2) वर्ष 1976 में नहर का पानी बीकानेर शहर के लिए लाने के लिये।

(3) वर्ष 1984 में चूरू जिले की 353 गाँवों की एशिया की सबसे बड़ी ग्रामीण जलापूर्ति परियोजना की क्रियान्वित करने के लिये।

(4) वर्ष 1990 में बालोतरा में बाढ़ के दौरान जलापूर्ति कायम रखने के लिये अत्यन्त मुस्तैदी से कार्य करने के लिये।

कर्त्तव्य के प्रति अपनी समर्पण भावना और कठिन परिश्रम के कारण वे राजस्थान राज्य और सम्पूर्ण देश में साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में एक शोध–विशेषज्ञ के रूप में और जन–स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी शिक्षा

के क्षेत्र में सुरक्षित और शुद्ध पेयजल उपलब्ध करवाने, सीवेज की निकासी की उचित व्यवस्था करने और क्षेत्रों को वायु प्रदूषण रहित रखने के क्षेत्र में एक जानी–मानी हस्ती बन गये।

श्री सोहन राज तातेड़ हमेशा तेरापन्थ से जुड़े रहे हैं और उन्होंने इस पंथ की सेवा और विकास के लिये अनवरत और अनथक रूप से कार्य किया है। धर्मसंघ के प्रति अपार श्रद्धा एवं समर्पण और उसमें पूर्ण आस्था तथा सभी साधुओं और साध्वियों के प्रति आदरभाव रखने के कारण उन्हें कई बार सम्मानित और पुरस्कृत किया गया। वर्ष 1987 में उन्हें अखिल भारतीय तेरापन्थ युवक परिषद् द्वारा 'युवक रत्न' अलंकरण प्रदान किया गया। ऐसा सम्मान और सौभाग्य बिरलों को ही मिलता है। वर्ष 2010 में उन्हें दिगम्बर जैन समाज द्वारा 'समाज भूषण' की उपाधि प्रदान की गई। वर्ष 2008 में सिवाकासी (पूर्वी तमिलनाडु) के द्वारा तेरापन्थ समाज का 'समाज सेवा पुरस्कार', वर्ष 2009 में जसोल जैन विकास मंच, सूरत द्वारा 'जसोल गौरव', वर्ष 2009 में राष्ट्रीय स्वतन्त्र समता मंच द्वारा 'इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय एकता पुरस्कार', वर्ष 2009 में दिगम्बर जैन समाज द्वारा 'जैन ज्ञान– विज्ञान मनीषी' पुरस्कार, वर्ष 2009 में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) के द्वारा 'योग रत्न' (Gem of Yoga) पुरस्कार, वर्ष 2010 में राष्ट्रीय स्वतन्त्र समता मंच द्वारा 'समरसता उत्कृष्टता पुरस्कार,' प्रदान किया गया।

वर्ष 2010 में उन्हें वैकल्पिक चिकित्सा, भारत एवं मलेशिया के रोहिणी संस्थान के द्वारा 'विशेष पुरस्कार' भी दिया गया। वर्ष 2010 में उन्हें भारत–नेपाल समरसता अन्तर्राष्ट्रीय संस्थान द्वारा 'भारत–नेपाल मैत्री" (Indo-Nepal Harmony) पुरस्कार, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, बनारस (उत्तरप्रदेश) की भारतीय योग एकेडमी द्वारा वर्ष 2010 में 'फैलो पुरस्कार' (Fellow Award), वर्ष 2010 में लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ (उत्तरप्रदेश) के द्वारा 'प्राकृतिक चिकित्सा रत्न' पुरस्कार, वर्ष 2011 में भारत–भूटान समरसता अन्तर्राष्ट्रीय द्वारा 'भारत–भूटान मैत्री' पुरस्कार', वर्ष 2011 में फ्रेण्डशिप फोरम आफ इंडिया, नई दिल्ली द्वारा 'भारत सर्वोत्कृष्टता पुरस्कार, वर्ष 2011 में होलिस्टिक मेडिसिन, सेलम (तमिलनाडु) द्वारा "श्री पतंजलि महर्षि अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कार" प्रदान किया गया।

दिनांक 06.02.2012 को शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य करने के लिये उन्हें सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय, वेरावल (गुजरात) के दीक्षान्त समारोह में राज्यपाल गुजरात सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। दिनांक 02.03.2012 को योग के क्षेत्र में अनुसंधान करने के लिये उन्हें उत्तर प्रदेश सरकार की संस्था RIMS & R, सैफई, इटावा द्वारा भी सम्मानित किया गया। 20 मार्च 2013 को इण्डियन बोर्ड ऑफ आल्टरनेटिव मेडिसिन, कोलकता संस्था द्वारा योग के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाओं के लिए आपको "योग पद्मभूषण" अलंकरण से नवाजा गया। इसके अतिरिक्त आपको समय–समय पर निम्न राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा निम्न अवार्डों से नवाजा गया :

1. **Vigyan Shri Award",** Jain Digambar Samaj, Udaipur (Raj.) (2013) for contribution in blending Science & Spirituality.
2. **"Swaran Samman",** Bhikshu Bodhi Sthal, Rajsamand (Raj.) (2013) for building monks & nuns characters.
3. **"Samaj Ratna",** Jain Swetambar Samaj, Sirohi (Raj.) (2013) for uplifiting human, moral, social values in society.
4. **"Jain Ratna",** Akhil Bhartiya Jain Akta Munch Sansthan, Udaipur (Raj.) (2013) for services towards humanity.
5. **"Sevachakra Puruskar",** All India Economy survey Award Council, New Delhi (2014) for service to society.
6. **"India Award for Excellence in Education",** Friedship Form of India, New Delhi (2014) for excellence in Education.
7. "**Rastriya Jyoti Award",** Global Brotherhood Forum, New Delhi (2014) for social services.
8. **"IJMER Award for 2014",** IJMER, Vishakhapatnam (A.P.) (2014) for 50 years service to society.
9. **"Shining Image of India",** All India Economy Survey Award Council, New Delhi (2014) for excellence in Education.
10. **"Global Excellence Award",** Global Brotherhood Forum, New Delhi (2014) for excellence in social services.
11. **"Lifetime Achievement Award",** Adileela foundation, New Delhi (2014) for service to humanity.
12. **"Oswal Ratna Award,"** Oswal Samaj, Jodhpur (Raj.) (2014) for social services.
13. **"Bhamashah Alankaran",** Rajastha Govt. for donation for up gradation of building from Middle to Secondary School at Kanor (Dist. Barmer- Raj.)
14. **"Sevashri Award",** Narayan Seva Sansthan, Udhaipur (Raj.) (2014) for help to disabled persons.
15. **"Mother Teresa Seva Ratna Award",** All India Economy Survey Council, New Delhi (2014) for lifetime service to society.
16. **"SAARC Samrasta Award",** Samrasta International, Jaipur (Raj.) (2014) for service in education field.

17. **"Rastriya Gaurav Award ",** India International Friendship Society, New Delhi (2014) for service in education field
18. **"Icon of Philosophy Award",** Sucharitha, Visakhapatnam (2014) for Philosophy work.
19. **"Lifetime Achievement ",** All India Economy Survey Council, New Delhi (2014) for lifetime service to society.
20. **"Samrasta Karma Ratna Award",** Samrasta International Congress, Nepal (2014) for social service.
21. **"Best Personalties of India",** Friendship Forum, New Delhi (2015) for Welfare of Indian people.
22. **"Felicitated by International Lions Club, Jodhpur (Raj.)",** Year (2015), for 50 years long contribution to society.
23. **"Jain Padma Shri",** Kantisagar Suri Smark Trust, Mandwala (Raj.) (2015) for 50 year long service to Humanity.
24. **"Academic Jwel of India",** Andhra Pradesh Editors Association, Vishakhapatnam (2015), for long service in Education field.
25. **"Felicitated by World Yoga Foundation",** World Yoga Foundation, Kolkata (W.B.) (2015) for 50 years services to Yoga field.
26. **"Indira Gandhi Award for Excellence",** Global Brotherhood Form, New Delhi (2015) for selfless long service to society.
27. **"Felicitated by Narayan Seva Sansthan",** Narayan Seva Sansthan, Udaipur (Raj.) (2015) for financial help to disabled persons.
28. **"Global Health Excellance Award",** Economic Growth Foundation, New Delhi (2015) for long service to Society in the field of health by Yoga.
29. **"Felicitated by Maulik Adhikar National Association",** Maulik Adhikar National Association, New Delhi (2015) for environmental protection while serving in P.H.E.D. as an Engineer.
30. **"International Achiever Gold star Award",** All India Development Association (Delhi-Dubai) (2015) given at Dubai (UAE) for projecting Indian culture abroad.
31. **"Felicitated by Akhil Bhartiya Darshan Parishad",** Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Allahabad (U.P.) (2015) for great contribution to Philosophy field.

32. **"Felicitated by Indian Society of Gandhian Studies",** Indian Society of Gandhian Studies, Pune (Mah.) (2015) for spreading Gandhian Ideology in Schools/Colleges/ Universities.
33. **Shiksha Padmavibhushan Award",** India Board of Alternative Medicines, Kolkata (W.B.) (2015) for long time devotion to Education, Philosophy and Yoga.
34. **"Felicitated by Vedanta Research Centre",** Vedanta Research Centre, Ranchi (Jharkhand) (2015) for long time working with devotion in comparative Religion field.
35. **"Felicitated by IIT Mumbai and Mumbai University",** IIT Mumbai and Mumbai University, Mumbai (Mah.) (2016) for long time contribution in the field of Jainism and Science.
36. **"Felicitated by India Academy of Yoga, B.H.U.",** India Academy of Yoga, B.H.U., Varanasi (U.P.) (2016) long service in the field of Yoga.
37. **"Acharya Bhikshu Pragya Samman",** Vigyan Samiti, Udaipur (Raj.) (2016) for 50 years contribution to Jain Dharm-Darshan.

जैन विश्व भारती, जो तेरापन्थी जैन धर्मावलम्बियों के लिये एक अत्यन्त पवित्र स्थान है, के विकास लिये श्री सोहन राज तातेड़ के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। अब वे अधिशाषी अभियन्ता के पद पर 1979 से 1985 चुरू नियुक्त थे तब जैन विश्व भारती, लाडनूँ के परिसर में अनेक उल्लेखनीय निमार्ण कार्य करवाने में इनकी अहम् भूमिका रही है। उन्होंने वहाँ एक कुआँ खुदवाने, एक भूमिगत पानी का टैंक बनवाने, एक ऊपर की पानी की टंकी बनवाने, पाइप–लाइनें बिछवाने, बिजली का वितरण करवाने और एक बिजली का जेनरेटर लगवाने में अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अमृतायन और कला–दीर्घा जैसी अनेक सुन्दर ईमारतों की डिजाइन बनवाने और उन कार्यों की देखभाल करने में भी सक्रिय भूमिका निभाई।

वर्ष 1989 में श्री सोहन राज तातेड़ ने अपना अधिकतम समय 'युवा–वाहिनी' के स्वतन्त्र संचालन में लगाया। 'युवा–वाहिनी' युवाओं के विकास के लिये प्रतिबद्ध एक संगठन है और वर्ष 1989 को 'योगक्षेम वर्ष' घोषित किया गया था। उन्होंने यह महत्त्वपूर्ण कार्य तब किया जब वे अखिल भारतीय युवक परिषद के उपाध्यक्ष के रूप में अपनी मानद सेवायें दे रहे थे।

आचार्य महाप्रज्ञ की 'अहिंसा यात्रा' (अहिंसा को प्रोत्साहित करने के लिये की गई यात्रा) के दौरान श्री सोहन राज तातेड़ ने, आचार्य श्री महाप्रज्ञ की प्रेरणा से और उनका आशीर्वाद और अपने परिवार की अनुमति से तेरापंथ धर्म संघ की सेवा के लिए सरकारी नौकरी से स्वेछापूर्वक नियुक्ति ली। उस समय वे राजस्थान सरकार के जलदाय विभाग में सुपरिन्टेन्डिंग इंजीनियर पद पर कार्य कर रहे थे।

उन्होंने अपने परिवार की करोड़ो रूपयों की सीमेंट की सुस्थापित फैक्टरी का भी परित्याग कर दिया और सब आजीवन स्वयं सेवक के रूप में अपना शेष जीवन एक जीवन–पर्यन्त स्वयं सेवक के रूप में तेरापंथ धर्मसंघ की निःस्वार्थ भाव से सेवा करने में बिताने का निर्णय ले लिया। उन्होंने जनवरी 2002 में अपने निर्णय की आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में औपचारिक रूप से घोषणा कर दी। 26 जनवरी, 2002 को आचार्यश्री और युवाचार्यश्री ने बोरानाड़ा (जोधपुर) स्थित उनकी सीमेंट फैक्टरी में बिराज कर अपनी पवित्र उपस्थिति से उनका मान बढ़ाया। उसी दिन, प्रातः काल के शुभ समय में उन्होंने आचार्यश्री से आशीर्वाद प्राप्त कर और उनसे मंगल–पाठ श्रवण कर पारमार्थिक शिक्षण संस्थान, लाड़नूँ को अपनी मानद सेवायें देनी प्रारम्भ कर दी। 18 फरवरी 2002 को श्री सोहन राज तातेड़ को पचपदरा में आयोजित मर्यादा महोत्सव के अवसर पर आचार्यश्री की दिव्य उपस्थिति में पारमार्थिक शिक्षण संस्था के ट्रस्ट बोर्ड द्वारा औपचारिक रूप से इस संस्था का ट्रस्टी और संयोजक मनोनीत किया गया।

श्रद्धा, समर्पण, आचार्यश्री एवं समस्त बड़ों के प्रति आदर, साधना, लगन और धर्मसंघ की सेवा – ये समस्त गुण उनके जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। उन्होंने आचार्यश्री तुलसी के सूत्र, "निज पर शासन, फिर अनुशासन" को पूरी तरह से अपने जीवन में उतारा है। "सदा जीवन और उच्च विचार" उनके जीवन का मूलमन्त्र रहा है।

सोहन राज तातेड़ महात्मा गाँधी के जीवन से उस समय से प्रभावित हैं, जब वे स्कूल के विद्यार्थी रहे। उन्होंने महात्मा गाँधी के जीवन चरित्र को न केवल पढ़ा बल्कि उनके मूल विचारों को मन, वचन और कर्म से अपने जीवन में भी उतारा। उनका दैनिक जीवन प्रकृति का समर्थन करने वाले दर्शन शास्त्र पर आधारित है। उन्होंने जैन धर्म के 12 व्रत स्वीकार किये हैं और वे पर्यावरण की रक्षा करने वाली जीवन शैली से सच्चाई का जीवन जी रहे हैं।

प्रोफेसर (डॉ॰) तातेड़ एक महान् सामाजिक कार्यकर्त्ता हैं और वे अनथक रूप से समाज को अपनी सेवाये दे रहे हैं। वे निम्नलिखित 27 राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठनों से जुड़कर संरक्षक, मुख्य संरक्षक, आजीवन सदस्य, परामर्शक और एसोसियेट सदस्य के रूप में करोड़ो भारतीयों की प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से उनके उत्थान, लाभ और विकास के लिये सेवा कर रहे हैं। ये सभी संगठन शिक्षा, साहित्य और समाज सेवा के क्षेत्र में काम कर रहे हैं। उनका विवरण निम्नानुसार है :–

(1) एसोसियेट सदस्य – काउंसिल फॉर रिसर्च एण्ड फिलॉसॉफी, वाशिंगटन D.C, 20064 (यू॰एस॰ए॰)।

(2) सदस्य – पीस नैक्स्ट, विश्व धर्म संसद, मेलबार्न, आस्ट्रेलिया।

(3) परामर्शक – द ओपन इन्टरनेशनल यूनिवर्सिटी फॉर कम्प्लीमेंट्री मैडिसिन्स, कोलम्बो (श्रीलंका)।

(4) परामर्शक एवं आजीवन सदस्य – इंडियन होलिस्टिक मैडिकल ऐकेडेमी, चैन्नई (तमिलनाडु)।

(5) संरक्षक – राष्ट्रीय समता स्वतन्त्र मंच एवं समता इन्टरनेशनल, जयपुर (राज॰)।

(6) परामर्शक – नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ऑल्टरनेटिव मेडिसिन्स सिस्टम, बैंगलोर (कर्ना॰)।

(7) विशिष्ट सदस्य – भारत स्वाभिमान ट्रस्ट, पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार (उत्तराखण्ड)।

(8) मुख्य संरक्षक एवं आजीवन सदस्य – उत्तर प्रदेश प्राकृतिक चिकित्सा एवं योग शिक्षक एवं चिकित्सक एसोसियेशन, लखनऊ (उ॰प्र॰)।

(9) संरक्षक एवं आजीवन सदस्य – अखिल भारतीय दर्शन परिषद, जबलपुर (म॰प्र॰)।

(10) संरक्षक – धर्म दर्शन सेवा संस्थान, उदयपुर (राजस्थान)।

(11) संस्थापक सदस्य – ज्ञान सागर साइंस फाउण्डेशन, नई दिल्ली।

(12) सदस्य – इन्टरनेशनल एसोसियेशन ऑफ लॉयन्स क्लब, जोधपुर पश्चिम।

(13) आजीवन सदस्य – इंडियन फिलॉसोफी कांग्रेस, नई दिल्ली।

(14) आजीवन सदस्य – इंडियन सोसाइटी ऑफ गाँधीयन स्टडीज, चंडीगढ़ (पंजाब)

(15) आजीवन सदस्य – इंडियन ऐकेडमी ऑफ योग, वाराणसी (उत्तर प्रदेश)।

(16) आजीवन सदस्य – एम॰बी॰एम॰ इंजीनियरिंग कॉलेज, एलुमनाई एसोसियेशन, जोधपुर (राज॰)।

(17) परामर्शक एवं संरक्षक – सिवांची मालाणी रीजनल तेरापंथ संस्थान, बालोतरा (राज॰)।

(18) प्रेक्षक – दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान, हस्तिनापुर (उत्तर प्रदेश)।

(19) आजीवन सदस्य – जैन विश्व भारती, लाड़नूँ (राजस्थान)।

(20) आजीवन सदस्य – अणुव्रत विश्व भारती, राजसमंद (राजस्थान)।

(21) आजीवन सदस्य – ऑल इण्डिया ओरिएण्टल कान्फरेंस, पुणे (महाराष्ट्र)।

(22) आजीवन सदस्य – इंटरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ योग एण्ड स्पिरिचुअल साइंस, धारवाड़ (कर्ना॰)।

(23) आजीवन सदस्य – आचार्य तुलसी शान्ति प्रतिष्ठान, गंगाशहर (राजस्थान)।

(24) आजीवन सदस्य – जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, कोलकाता (पश्चिम बंगाल)।

(25) आजीवन सदस्य एवं परामर्शक – इंडियन सोसाइटी ऑफ U3A

(26) आजीवन सदस्य – राजस्थान पेंशनर्स एसोसियेशन।

(27) आजीवन सदस्य एवं परामर्शक – इंटरनेशनल कॉंग्रेस ऑफ सोशल फिलॉसोफी, धारवाड़ (कर्ना॰)।

प्रोफेसर तातेड़ स्वयं भी साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित गैर सरकारी संगठनों द्वारा जीवन पर्यन्त चलाई जाने वाली निम्नलिखित गतिविधियों के प्रायोजक हैं :

प्रो॰ तातेड़ वर्ष की सर्वश्रेष्ठ साहित्यिक कृति और शोध पत्र के लिये पुरस्कार और विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं के प्रकाशन के लिये स्थायी कोष अपने एवं अपनी धर्मपत्नी लक्ष्मी देवी के नाम से प्रदान करते हैं। इसके अतिरिक्त वे अपने माता–पिता की स्मृति में, निरन्तर गिरते हुए नैतिक, मानवीय, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये प्रवचन श्रृँखलायें भी संचालित करते हैं, जैसे – अखिल भारतीय दर्शन परिषद, जबलपुर (मध्यप्रदेश) के अंतर्गत आजीवन चलने वाली जैन प्रवचन श्रँखला। यह प्रवचन श्रृंखला उनके माता–पिता 'स्वर्गीय श्रीमती चम्पा देवी एवं स्वर्गीय श्री मुल्तान मल, जसोल (राजस्थान) स्मृति जैन प्रवचन श्रृंखला' नाम से चलाई जाती है।

प्रोफसर (डॉ॰) सोहन राज लक्ष्मी देवी तातेड़, जोधपुर (राजस्थान), के नाम से प्रदान किये जाने वाले पुरस्कार एवं स्थायी कोष निम्नानुसार हैं :–

1. Philosophy Research Book Award in Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur (M.P.).

2. Research Paper Award in Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur (M.P.).

3. Philosophy Research Book Award in Indian Philosophical Congress, Haridwar (Utttrakhand).

4. Research Paper Award in Indian Philosophical Congress, Haridwar (Utttrakhand).

5. Yoga Research Book Award in U.P. Naturopathy & Yoga Teachers & Physicians Association, Lucknow (U.P.).

6. Yoga Research Paper Award in U.P. Naturopathy & Yoga Teachers & Physicians Association, Lucknow (U.P.).

7. Journal Publication Permanent Fund in Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur (M.P.)

8. Journal Publication Permanent Fund in Indian Philosophical Congress, Haridwar (Utttrakhand).

9. Gandhian Book Award in Indian Society of Gandhian Studies, Darbhanga (Bihar).

10. Gandhian Thought Paper Award in Indian Society of Gandhian Studies, Darbhanga (Bihar).

11. Gandhian Lecture Series in Indian Society of Gandhian Studies, Darbhanga (Bihar).

12. Yoga Research Book Award in Indian Yoga Academy, Varansi (U.P.)

13. Yoga Research Paper Award in Indian Yoga Academy, Varansi (U.P.)

14. Yoga Lecture Series Award in Indian Yoga Academy, Varansi (U.P.)

15. Permanent Corpus Fund in Narayan Seva Sansthan, Udaipur (Raj.) for welfare of Handicapped persons.

16. Life time Achievement Award in Akhil Bhartiya Darshan Parishad, Jabalpur (M.P.).

17. Permanent Corpus Fund in Vishva Jagrati Mission, New Delhi for welfare of Orphan children.

18. Life time Achievement Award in Indian Philosophical Congress, Haridwar (Uttrakhand).

19. Permanent Corpus Fund in Netraheen Vikas Sansthan, Jodhpur (Raj.) for welfare of Blind, Deaf and Dumb persons.

साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रोफेसर तातेड़ का कार्य राष्ट्रव्यापी, अति उच्चस्तरीय, समस्या–मूलक और आवश्यकता–आधारित है। प्रो॰ तातेड़ ने अपने जीवन के 50 वर्ष, अपना आधे से अधिक जीवन मानवता की सेवा में समर्पित किया है। परन्तु उनके जीवन के वर्तमान 15 वर्ष उपलब्धियों से और शोध सहित उच्च शिक्षा के विशेष विषयों पर परिणामोन्मुखता से भरे हुए रहे हैं। इन वर्षों में उन्होंने 100 सन्यासी चरित्रों का निर्माण किया। गैर–सरकारी संगठनों, विद्यालयों, कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और अन्य सार्वजनिक स्थानों पर जन–साधारण की नकारात्मक सोच जैसे– घृणा, अहंकार, असंवेदनशीलता, क्रोध और हिंसा आदि को नियन्त्रित करने के लिये योग के केम्प लगाये हैं। पी॰एच॰डी॰, स्तर के शोध ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित करवाए और विद्यार्थियों के पढ़ने हेतु उन्हें भारत की प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उपलब्ध करवाऐ।

साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो॰ तातेड़ ने शिक्षा के अपेक्षाकृत नये और नवप्रवर्तनकारी क्षेत्रों जैसे–भावनाओं पर नियन्त्रण के लिये योग, एक सुसंस्कृत व्यक्ति के निर्माण के लिये व्यावहारिक शिक्षा और मानवीय, नैतिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये दर्शन शास्त्र पर विशेष कार्य किया है। उनका यह कार्य नई स्वस्थ पीढ़ी का निर्माण करेगा जिसमें संस्कृति, साहस और शिष्टाचार जैसे गुण होंगे। प्रो॰ तातेड़ ने अपने विषयों– शिक्षा, योग और दर्शन पर 130 पीएच॰डी॰ स्तर के शोध ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित करवाए हैं, जिन्हें भारत की 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता हैं। इसके अतिरिक्त निम्न 30 और शोध–ग्रन्थों को लिखने और प्रकाशित करवाने का प्रो॰ तातेड़ का कार्य चल रहा है। इन 30 शोध ग्रन्थों को भी भारत की उन्हीं 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जायेगा। लाखों स्नातकोत्तर एवं शोध–छात्र अपने मूल/सन्दर्भ पुस्तकों के रूप में प्रो॰ तातेड़ के लिखे हुए इन शोध ग्रन्थों का भरपूर लाभ उठा रहे हैं।

हमारे देश में प्रो॰ तातेड़ जैसे बहुत कम विद्वान होंगे जो उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों की इस प्रकार सेवा कर रहे हैं। इस दृष्टि से देखा जाये तो प्रो॰ तातेड़ समाज के लिये अत्यन्त उपयोगी हैं। डॉ॰ तातेड़ ने मानवता की सेवा के लिये अपने विषयों में अधिक से अधिक पीएच॰डी॰ स्तर के शोध–ग्रन्थ लिखना ही अपने शेष जीवन का लक्ष्य बना लिया है। डॉ॰ तातेड़ ने समाज के प्रति अपनी 50 वर्षों की लम्बी सेवा का पूरा विवरण इस प्रकार प्रदर्शित किया है– योग, शिक्षा और दर्शन शास्त्र के कैम्प आयोजित करना, वैब साइट्स और गूगल पर शोध–ग्रन्थ, रचनायें प्रदर्शित करना और सेमीनार/सम्मेलन आयोजित करना ताकि भारतीय समाज के लोग उनका अनुसरण कर सकें और उनसे प्रेरणा प्राप्त कर सकें। यह उनकी मानवता के प्रति एक बहुत बड़ी सेवा है।

डॉ॰ तातेड़ ने समाज सेवा का कार्य वर्ष 1969 में राजस्थान सरकार के जन–स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग में इंजीनियर के रूप में कार्य करते हुए ही प्रारम्भ कर दिया था। प्रो॰ तातेड़ में बचपन से ही समाज सेवा करने की भावना थी, इसीलिये अपने कार्यक्षेत्र के रूप में उन्होंने इस विभाग को चुना ताकि वे अधिक से अधिक लोगों– विशेषकर राजस्थान के ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों की अधिक से अधिक सेवा कर सकें। राजस्थान राज्य की जलापूर्ति योजनाओं के सर्वेक्षण, क्रियान्विति और रख–रखाव के लिये प्रो॰ तातेड़ ने वर्ष 1969 से 1998 कुल तीस वर्षों के जन स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग के अपने लम्बे कार्य–काल में नियमों के अन्तर्गत हजारों युवकों और युवतियों, विशेषतः जनजातीय और ग्रामीण क्षेत्रों के कमजोर वर्गों को रोजगार दिलवाया।

वर्ष 1969 से 1998 के दौरान प्रो॰ तातेड़ ने अपने हजारों कर्मचारियों विशेषतः जनजातीय और कमजोर वर्ग के परिवारों को इस बात के लिये प्रेरित किया कि वे अपने बच्चों को पढ़ाई के लिये विद्यालय भेजें। इन वर्षों के दौरान डॉ॰ तातेड़ ने अधिकांशतः दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में कार्य किया, जहाँ शुद्ध और सुरक्षित पेयजल का भारी अभाव था। प्रो॰ तातेड़ प्रदर्शनों (demonstrations) प्रवचनों और इंजीनियरिंग प्रयोगों के माध्यम से अपने कर्मचारियों को इंजीनियरिंग की शिक्षा दिया करते थे। इस अवधि में, सहायक इंजीनियर से सुपरिन्टेडिंग इंजीनियर के पद पर रहते हुए, प्रो॰ तातेड़ ने ग्रामीण समाज को सुरक्षित और शुद्ध पेयजल प्रदान करवा कर उनकी महती सेवा की। अपने कार्यकाल का अधिकतम उपयोग करते हुए उन्होंने हजारों की संख्या में भूमिगत कुए (tube wells) खुदवाये और हैण्ड पम्पस् लगवाये। दूर–दराज के गावों को आपस में जोड़ने के लिये प्रो॰ तातेड़ ने लाखों किलोमीटर लम्बी पाइप लाइनें बिछवाई। इस प्रकार प्रो॰ तातेड़ ने मानवता की सेवा के लिये बड़ा भारी कार्य किया।

अपने आध्यात्मिक गुरू आचार्य महाप्रज्ञजी की प्रेरणा से जन–स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद प्रो॰ तातेड़ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (जि॰ नागौर, राजस्थान) में प्रोफेसर और शोध सुपरवाइजर के रूप में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अपना कार्य प्रारम्भ किया। इस विश्वविद्यालय में प्रो॰ तातेड़ ने प्रोफेसर, बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के सदस्य, एकेडेमिक काउंसिल के सदस्य, विश्वविद्यालय के परामर्शक और सीनेट के सदस्य आदि विभिन्न रूपों में अपनी मानद सेवायें दी। इतना ही नहीं, प्रो॰ तातेड़ ने हजारों स्नातकोत्तर छात्रों को अपने विषयों – शिक्षा, दर्शन, योग– पढ़ाने और शोध सुपरवाइजर के रूप में कार्य करने के लिये भी अवैतनिक सेवायें दी।

पारमार्थिक शिक्षण संस्था में मानद संयोजक के रूप में कार्य करते हुए प्रो॰ तातेड़ ने 100 से अधिक विरक्त युवकों और युवतियों को पढ़ाने का कार्य किया, जिन्होंने अपने परिवारों और समस्त धन–सम्पत्ति का परित्याग कर दिया था और उनमें से सभी युवक और युवतियों आचार्य महाप्रज्ञजी से दीक्षा प्राप्त कर सन्यासी बने। ये सभी 100 सन्यासी सम्पूर्ण भारत वर्ष और विदेशों में भी लाखों व्यक्तियों को, उनमें मानवीय,

नैतिक और आध्यात्मिक मूल्य विकसित करने का उपदेश दे रहे हैं। इस प्रकार प्रो॰ तातेड़ ने आधुनिक समाज में गिरते हुए मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना के लिये अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। इन 100 सन्यासियों के चरित्र–निर्माण को डॉ॰ तातेड़ अपने जीवन के सर्वश्रेष्ठ और पवित्रतम कार्यों में से एक कार्य मानते हैं। प्रो॰ तातेड़ ने सम्पूर्ण श्रृद्धा और समर्पण के साथ जिन कॉलेजों, विश्वविद्यालयों और गैर सरकारी संगठनों में मानद कार्य किया है और अभी भी कर रहे हैं, उनकी सूची बहुत लम्बी है। उनमें से कुछ का विवरण निम्नानुसार हैं :–

(1) वाइस–चांसलर – सिंघानिया विश्वविद्यालय, पचेरी बड़ी, जि॰ झुँझुनूँ (राजस्थान)।

(2) प्रोफसर के रूप में स्नातकोत्तर कक्षाओं के छात्रों को दर्शन, शिक्षा और योग की शिक्षा प्रदान करने का लम्बा अनुभव।

(3) जन–स्वास्थ्य अभियान्त्रिकी विभाग, राजस्थान सरकार में कार्यरत रहे और सुपरिन्टेंड़िग इंजीनियर के पद पर कार्यरत रहते हुए स्वैच्छिक सेवा निवृत्ति ले ली।

(4) प्रो॰ तातेड़ भारत की विभिन्न विश्वविद्यालयों में पीएच॰डी॰ सुपरवाइजर के रूप में पंजीकृत हैं। वर्तमान में 7 विद्यार्थी उनकी देख रेख में पीएच॰ डी॰ कर रहे हैं। प्रो॰ तातेड़ को स्नातकोतर कक्षाओं के प्रश्नपत्र निर्माता और उनकी उत्तर–पुस्तिकाओं के परीक्षक के तौर पर बुलाया जाता रहा है। उन्हें भारत की विभिन्न विशविद्यालयों में दर्शन, योग और शिक्षा विषयों में पीएच॰डी॰ बाह्य परीक्षक के रूप में पँजीकृत किया जा चुका है।

(5) प्रो॰ तातेड़ विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली के पैनल सदस्य हैं।

(6) डॉ॰ तातेड़ न्यू एज इंटरनेशनल यूनीवर्सिटी, केलीफॉर्निया (संयुक्त राज्य अमेरिका) और ट्रिनीट्री वर्ल्ड यूनीवर्सिटी (यूनाइटेड किंगडम) के रिसर्च सुपरवाइजर हैं।

(7) प्रो॰ तातेड़ ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (जि॰ नागौर राजस्थान) के बोर्ड ऑफ मैनेजमेंट के अवैतनिक सदस्य के रूप में कार्य किया है।

(8) श्री तातेड़ NAIU (U.S.A), TWU (U.K.), जोधपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जोधपुर (राजस्थान), JJTU और सिंघानिया यूनिवर्सिटी, झुँझुनूँ (राजस्थान) के सरंक्षक प्रोफेसर (Emeritus Professor) हैं।

(9) डॉ॰ तातेड़ ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, लाडनूँ (राजस्थान) में अवैतनिक परामर्शक के रूप में सेवाऐं दी।

(10) श्री तातेड़ ने पारमार्थिक शिक्षण संस्था, लाड़नूँ (राजस्थान) में अवैतनिक संयोजक के रूप में कार्य किया है। यह संस्था जैन साधु और साध्वियों के चरित्र निर्माण कार्य में संलग्न है। प्रो॰ तातेड़ के पढाये हुए स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के 100 साधको ने जैन साधु और साध्वियों के रूप में दीक्षा प्राप्त की।

(11) डॉ॰ तातेड़ अखिल भारतीय दर्शन परिषद, जबलपुर (मध्यप्रदेश) में उपाध्यक्ष के रूप में अवैतनिक सेवायें दे रहे हैं।

(12) प्रो॰ तातेड़ वैशाली (बिहार) से निकलने वाली संप्रज्ञा शोध–पत्रिका और विशाखापटनम (आँध्र प्रदेश) से निकलने वाली IJMER इंटरनेशनल जर्नल के सम्पादक मण्डल के मानद सदस्य के रूप में सेवा दे रहे हैं।

(13) प्रो॰ तातेड़ ने लाड़नूँ (राज॰) से प्रसारित होने वाली पत्रिका 'प्रेक्षा ध्यान योग' के मानद सम्पादक के रूप मे लम्बी सेवाऐं दी।

(14) समाज के लिये नैतिक शिक्षा, दर्शन, योग और धार्मिक शिक्षा पर प्रवचन देने के लिये प्रशिक्षित वरिष्ठ उपासक के रूप में मानद सेवारत हैं।

(15) प्रो॰ तातेड़ ने ब्राह्मी विद्यापीठ कॉलेज, लाड़नूँ (राजस्थान) के मानद डायरेक्टर के रूप में कार्य किया।

(16) डॉ॰ तातेड़ ने जैन विश्वभारती, लाड़नूँ (राजस्थान) की विद्वत परिषद में मानद सदस्य के रूप में कार्य किया।

(17) प्रो॰ तातेड़ कोलकाता (पश्चिम बंगाल) की संस्था 'पीस सोसाइटी वर्ल्डवाइड' के अवैतनिक परामर्शक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

(18) कोलकाता (पश्चिम बंगाल) की संस्था 'इंस्टीट्यूट ऑफ एजूकेशन, रिसर्च एवं डैवलपमैंट' के अवैतनिक परामर्शक के रूप में सेवारत हैं।

(19) प्रो॰ तातेड़ कोलकाता (पश्चिम बंगाल) के 'इंडियन बोर्ड ऑफ आल्टरनेटिव मेडिसिन्स' के अवैतनिक परामर्शक के रूप में सेवारत हैं।

(20) डॉ॰ तातेड़ ज्ञान सागर साइंस फाउण्डेशन नई दिल्ली के संस्थापक सदस्य के रूप में मानद सेवारत हैं।

(21) श्री तातेड़ ने जैन विश्व भारती, लाड़नूँ (राजस्थान) के अवैतनिक उप मंत्री के रूप में कार्य किया है।

प्रो॰ तातेड़ प्रचुर मात्रा में कृतियों की रचना करने वाले लेखक हैं और उन्होंने अब तक पीएच॰ डी॰ स्तर के 130 शोध ग्रन्थ लिखे और प्रकाशित करवाये हैं, जिनकी शिक्षा जगत् में व्यापक प्रशंसा हुई है। प्रो॰ तातेड़ ने शिक्षा, योग और दर्शन शास्त्र जैसे कठिन विषयों पर अपनी लेखनी चलाई। ये सारे 130 शोध ग्रन्थ भारत की 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की केन्द्रीय लाइब्रेरियों में उपलब्ध हैं और लाखों स्नातकोतर और शोध छात्र नियमित रूप से उनका मूल पाठ्य पुस्तकों अथवा सन्दर्भ पुस्तकों के रूप में लाभ उठा रहे

हैं। यह डॉ॰ तातेड़ की बहुत बड़ी उपलब्धि है। अपने देश में प्रो॰ तातेड़ के सदृश्य शिक्षा शास्त्रियों के बहुत कम उदाहरण मिलेंगे।

इन शोध ग्रन्थों को लिखने, प्रकाशित करवाने और भारत की 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उपलब्ध करवाने में प्रो॰ तातेड़ अद्वितीय और असाधारण हैं। उनके ये शोध ग्रन्थ निम्नानुसार हैं :–

1. The Jaina Doctrine of Karma and the Science of Genetics.
2. Enlightened Knowledge.
3. Jainagamo Aur Upanishado Ki Aachar Mimamsa.
4. Bhartiya Bhotikvad aur Markshvad : ak tulnatmak avam samikshatamak adhyayan.
5. Charvak aur Hume : ak tulnatmak darshnik adhyayan.
6. Gyan mimansa ki samikshatamak vivechna. (prachya aur paschatiya).
7. Kabir aur Mahapragya ka Samaj Kalyan Darshan.
8. Quotes of Mahatma Gandhi.
9. Jaina Karma Mimansa: Shastriya avam Vaigyanika Adhyayan.
10. Gyan Rashmiyon.
11. Bhartiya Darshan ki molik avdharnaye.
12. Yoga Therapy.
13. Women and Jainism.
14. Women and Christinity.
15. Prachya avam Pashchatya Darshano ki molik avdhrnaye.
16. Bach Flower Remedies.
17. Women and Judaism.
18. Women and Sikhism.
19. Bhartiya Darshano me tatva avam achar mimansa.
20. Yoga avam Samagra Svasthya.
21. Yoga Kiran.
22. Jain Karma vigyan aur Manovigyan.
23. Women and Islam.
24. Gandhi and the Geeta.
25. Revisiting Gandhi.
26. Yoga Spectrum.
27. Positive Thinking by Bach Flower Remedies.

28. Naxalism : A Great Threat.
29. Applied Ethics Burning Issues.
30. Sant Tulsi Sahitya Me Udatt Tattva.
31. Meghpradeep.
32. Kanchanpur Ki Sona – novel.
33. Abhishek novel.
34. Thendering Speeches of Mahatma Gandhi.
35. Chronological Biography of Mahatma Gandhi.
36. Yoga & Holistic Health.
37. Dharm Ak Swaroop Anek (Part – 1).
38. Dharm Ak Swaroop Anek (Part – 2).
39. Applied Ethics & Social Responsibility.
40. Bhartiya Adhunik & Prachin Shiksha Pranali.
41. Tattva Avm Achar Mimansa.
42. Atam Vigyan Ke Moulik Sidhanth.
43. Adhunik Bhartiya Chintak (Part – 1)
44. Adhunik Bhartiya Chintak (Part - 2)
45. The Complete Biography of Mahatma Gandhi (1st Volume)
46. The Complete Biography of Mahatma Gandhi (2nd Volume)
47. The Complete Biography of Mahatma Gandhi (3rd Volume)
48. Vedhic Sanskrit Sahitya Ka Itihas.
49. Bhartiya Darshan Ke Vibhan Swaroop (Part - 1).
50. Bhartiya Darshan Ke Vibhan Swaroop (Part – 2).
51. Chandolankar Vivechan.
52. Jain Shravak Achar Sahinta.
53. Prof.(Dr.) Sohan Raj Tater Abhinandan Granth.
54. Sanskrit Sahitya Ka Molik Itihas.
55. Swasth Avm Sukhi Parivar Ke Sutra.
56. Gurukul & Modern Education.
57. Total Health by Meditation.
58. Yoga for Deaf & Dumb Persons.

59. Felicitation Volume in Honour of Prof.(Dr.) Sohan Raj Tater.
60. Pragya Ke Ayam.
61. Paschtya Darshno Ki Atihasik Vivechana (Part-1).
62. Paschtya Darshno Ki Atihasik Vivechana (Part-2).
63. Feminism: Ethical Issues.
64. Holistic Health by Crystal Healing.
65. Surya Kiran Chikitsa Vigyan.
66. Historical Speeches of Mahtma Gandhi.
67. Determinism & Freedoma of Will.
68. Salatkalin Itihas Avm Sanskriti.
69. Madhukar Muni Ke Manavta Ko Avdan.
70. Madhyakalin Bharat Ka Itihas (Part-1).
71. Madhyakalin Bharat Ka Itihas (Part-2).
72. Atma Aur Karma: Bandhan Avm Mukti.
73. Pungalgadh Ri Padmani.
74. Bharat Me Angrejirajya Avm Navjagran.
75. Health & Healing by Water Therapy.
76. Holistic Health by Astro Therapy.
77. Health & Healing by Reflexology.
78. Bhartiya Navjagran Avm Rastriya Andolan.
79. Varisth Nagrik Jivan darshan.
80. Science & Spiritual Thoughts of Gurudev Ranade.
81. Globalization and Human Rights
82. Purva Madhyakal Ka Itihas (Year 1206-1526)
83. Theory and Practice of Psychotherapy
84. Modern Relevance of Theravada Buddhist Ethics
85. Darshan Path
86. Education : A Lifelong Learning Journey
87. Empowerment : As You Think
88. Emerging Trends in Philosophy
89. A Concise Guide to Health by Biochemic Remedies

90. Prachin Bharat Ka Arthik, Samajik Avm Dharmik Itihas (Vol-1)
91. Prachin Bharat Ka Arthik, Samajik Avm Dharmik Itihas (Vol-2)
92. Bharat Ke Simavrati Desho Ka Itihas (Vol-1)
93. Bharat Ke Simavrati Desho Ka Itihas (Vol-2)
94. Asia Mahadweep Ke Dweep-Samooh Ka Itihas
95. Yurop Ke Dhuri Avm Mitra Rastron Ka Itihas
96. Bhagwan Jambheshwar Ke Srasti Ko Avdan
97. Autobiography of Sohan Raj Tater
98. Health by Cow Milk
99. Mansik Tanav Karan- Nivaran
100. Cow Urine Therapy.
101. Panarvi Sadi tak ka Islami Sansar
102. Samkalin Vishva (1919 to Vartman)
103. Vishva Itihas ke Gauravshali Pal
104. Vishva ke Pramukh Dharm
105. Bhartiya Samaj : Sanrachna Avm Parivartan
106. Samajik Anusandhan ki Shodh Vidhiyo
107. Samaj Shastra : Nai Dishaye
108. Bhogolik Chintan ka Itihas
109. Future of Management : The Leading Change
110. Shiksha ka Udhesya Gyan avm Pathyacharya
111. Ganit Shikshan
112. Paryavaram Adynyayan Shikshan
113. Bhartiya Samaj aur Shiksha
114. Pedagogy of English Language
115. The Practical Work of Psychotheraphy
116. Modern Geography
117. An Introduction to Psychology
118. Kala Shiksha
119. Pachimi Asia Ka Adhunik Itihas
120. Holistic Management of Neurological Disorder

121. Suchna Avm Sampreshan Takniki
122. Hindi Bhasha Shikshan aur Praveenta
123. The Progress of Justice
124. Sikender Mahan
125. Yog Dwara Samagra Swasthya
126. Arthik Bhugol
127. Bache aur Bachpan
128. Bhasa, Sangyan aur Samaj
129. Jain Darshan avm Paryavarn
130. Holistic Health by Prekshasmediataion and Jivan Vigyan

उपर्युक्त शोध ग्रन्थों के क्रम को जारी रखते हुए प्रो॰ तातेड़ अभी भी पीएच॰डी॰ स्तर के शोध ग्रन्थ लिख रहे हैं और शिक्षा, योग एवं दर्शन शास्त्र विषयों में उनकी लिखी हुई 30 पुस्तकें प्रकाशनाधीन हैं और ये ग्रन्थ भी भारत की उन्ही प्रतिष्ठित 100 विश्वविद्यालयों में आगे आने वाले वर्षों में लाखों स्नातकोत्तर और पीएच॰ डी॰ करने वाले विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाए जायेंगे। प्रो॰ तातेड़ ने अपने शेष जीवन का लक्ष्य 200 पीएच॰ डी॰ स्तर की पुस्तकें लिखने, प्रकाशित करने और उन्हीं 100 प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों में उपलब्ध करवाने का बना रखा है। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रो॰ तातेड़ की अपने लक्ष्य के प्रति निष्ठा और समर्पण को देखते हुए वे इस सम्बन्ध में असाधारण सिद्ध होंगे और वे निकट भविष्य में पदम्विभूषण प्राप्त करने के अधिकारी (deserve) होंगे। इनकी 30 प्रकाशनाधीन पुस्तकों की सूची निम्नानुसार हैः–

1. Biography of Acharya Mahashraman.

2. Inspiring thought of Acharya Mahashraman.

3. Samkalin Paschatya Darshnik (Part : 1).

4. Samkalin Paschatya Darshnik (Part : 2).

5. Science of Human Body.

6. Manav Sharir Vigyan.

7-26. Women who Influenced Mahatma Gandhi (18 Vol.).

27. Theory of Perception in Nyay Philosophy

28. Sarvodaya & Education Philosophy of Mahatma Gandhi

29. Life Philosophy of Senior Citizens

30. Pachimi Asia Ka Adhunik Itihas.

प्रो॰ तातेड़ ने विश्व की सबसे लोकप्रिय अन्तर्राष्ट्रीय ऑन लाइन शोध पत्रिका में अपने विषयों– शिक्षा, योग और दर्शन पर 58 शोध पत्र लिखे और प्रकाशित करवाए। इस वैबसाइट पर उपलब्ध डाटा के अनुसार लाखों विद्वानों और शिक्षाविदों ने अपने शैक्षिक उद्धेश्यों के लिये इन शोध रचनाओं का उपयोग किया है। विश्व पटल पर की गई यह प्रो॰ तातेड़ की एक महान् शैक्षणिक सेवा है।

प्रो॰ तातेड़ ने अपने विषयों–शिक्षा, योग और दर्शन– पर लोकप्रिय राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं (Research Journals) में भी अपनी 45 शोध रचनायें लिखी और प्रकाशित करवाई हैं। लाखों शोध करने वाले विद्यार्थी और शिक्षाविद् अपने शैक्षिक उद्देश्यों के लिये इन शोध रचनाओं को सन्दर्भ रूप में मदद लेते हैं। साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रो॰ तातेड़ की यह महान् सेवा है।

प्रो॰ तातेड़ ने मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि, अध्यक्ष, मुख्य वक्ता, और विभागीय अध्यक्ष के रूप में 72 अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सभाओं, सम्मेलनों और सेमिनारों में भाग लिया है। इस भागीदारी के दौरान प्रो॰ तातेड़ ने उन लाखों सहभागियों से शोध शिक्षा के सम्बन्ध में अपने विचार साझा किये जिन्होंने इन सम्मेलनों और सेमिनारों में भाग लिया। साहित्य और शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय और विदेशी समाज के लिये यह प्रो॰ तातेड़ का बहुत बड़ा योगदान है।

डॉ॰ तातेड़ के द्वारा 25 अन्तर्राष्ट्रीय/राष्ट्रीय सम्मेलनों और सेमिनारों में सहभागी के रूप में पावर पाइंट के साथ और पावर पाइंट के बिना भी शोध–पत्र प्रस्तुत किये गये। इस प्रकार प्रो॰ तातेड़ ने सैंकड़ों स्नातकोत्तर/पीएच॰डी॰ छात्रों को पावर पाइंट सहित अथवा पावर पाइंट रहित प्रस्तुतिकरण के लिये शोध रचनायें तैयार करने और उन्हें प्रस्तुत करने का प्रशिक्षण दिया। यह प्रो॰ तातेड़ की इन क्षेत्रों में आने वाले नवागन्तुक उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए उत्कृष्ट सेवा साबित होगी।

गत दस वर्षों में प्रो॰ तातेड़ ने राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र और दिल्ली आदि राज्यों की विभिन्न संस्थाओं में सैंकड़ों कैम्पों का आयोजन किया है और आसन, प्राणायाम और ध्यान के प्रायोगिक प्रदर्शन किये हैं। हजारों लोग इन प्रायोगिक प्रदर्शनों से लाभान्वित हुए हैं और उन्होंने अपनी नकारात्मक भावनाओं जैसे–क्रोध, अहंकार, धोखा देने की प्रवृत्ति और अत्यधिक लालच – पर नियन्त्रण प्राप्त किया है। प्रो॰ तातेड़ के जीवन का यह महान् लक्ष्य है कि वे देशभर में दर्शन, योग और शिक्षा के विभिन्न कैम्प आयोजित करके अपने साहित्य के माध्यम से भारतीय समाज में पतनोन्मुखी मानवीय, नैतिक एवं आध्यात्मिक मूल्यों को पुनर्स्थापित करेंगे और समाज को शिक्षित एवं प्रशिक्षित करेंगे और उनमें इन मूल्यों के प्रति जागरूकता लाऐंगे।

प्रो॰ (डॉ॰) सोहन राज तातेड़ के www. herenow4u.net International online magazine, Berlin (Germany) में निम्न अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन :

1. Thesis on the subject "The Jaina doctrine of Karma and the science of Genetics".

2. The Role of Jaina ethics in peace and harmony of Global civilization.
3. Evolution of the living being in Jaina philosophy and science.
4. Promoting the culture of peace in the world.
5. The Role of Jainism in evolving a Global ethics.
6. Solution of Problems in the light of Acharya Mahaprajna's literature.
7. Role of Yoga in total health.
8. Commentary on thesis—The Jaina doctrine of karma and the Science of Genetics.
9. Karmic Theory in Jain Philosophy.
10. Utility of Science of Living in Life Building.
11. Vow of Voluntary Death in the Context of Victory Over Afflictions and Calamity.
12. A Devotee Votary : Yuvak Ratna Sohan Raj Tater.
13. Concept of Soul Substance in Indian Philosophies.
14. Reality in Western and Indian Philosophics—Jain View.
15. Idealism and Realism in Western and Indian Philosophies
16. Jain Karmic Theory and Genetic Science.
17. Acharya Tulsi : An Incarnation.
18. Problem Solving—In the Light of Acharya Mahapragya's Literature.
19. The First Step to Initiation—Parmarthik Shikshan Sanstha.
20. Highly Esteemed and Popular—Acharya Mahapragya.
21. Joy giving Mantra : Namo Arhantanam.
22. Formation of Sacraments in Girls : First Priority of Modern Age.
23. The Concept of Non-violence in Indian Philosophies.
24. Mitigation of violence against women around the globe.
25. Health management through Yoga and Naturopathy.
26. My study for the growth of Singhania University.
27. Relative Economics of Human life span.
28. Economics of Non-violence : Theory to action.
29. Necessity of Research in Yoga and Naturopathy.
30. Global water scarcity : problems and solutions.

31. Jainism – History, Philosophy and Traditions.
32. Concept of Prama in Jain Philosophy.
33. Life style management through Immunity, Yoga and Naturopathy.
34. Nari Sashktikaran ki Prasangitha.
35. Spiritual Understanding of Mahatma Gandhi.
36. Bio Ethics and Social Responsibility.
37. Naturopathic and Yogic cure of Blood Pressure.
38. Self Interaction of Karma & Genes in the light of Jain Philosophy.
39. Role of Yoga & Naturopathy in the development of Ideal life Style.
40. Value Education : The need of hour.
41. Interdiscipline of Vedanta and Jainism.
42. Caste Identity : In relation to tradition and modernity.
43. Peace Education & Value Education vis a vis sustainable development
44. Servival of Bio-Technology with Morality.
45. Total health by Diet Control.
46. Social Feminist Ethics.
47. Holistic Health by Water Therapy.
48. Ishavasya Midam.
49. Karma & Genes: Life Building Components.
50. Relevance of Yoga in 21 Century.
51. Atmakartatva Avm Ishwar : Ak Tulnatmak Dristi.
52. Jain and other systems of Yoga : Scientific Perspective.
53. Doctrine of Karma and Modern Scientific Discoveries.
54. Arvind ke Darshan ki Moulik Avdharnaye.
55. Need of Value Education in Modern Era.
56. Education Philosophy of Mahatma Gandhi.
57. Samrasta Sandesh.
58. Jain Science is absolute Eco-Friendly.

प्रो॰ तातेड़ की विशेषता यह है कि अपनी प्रकृति–दत्त बुद्धिमता, माता–पिता द्वारा दिये गये संस्कारों, अथक परिश्रम और परोपकार की भावना के कारण वे एक सामान्य व्यक्ति से इतने ऊँचे स्तर तक पहुँचे हैं कि वे न केवल स्थानीय समाज बल्कि सम्पूर्ण मानव जाति के लिये एक समृद्ध विरासत छोड़ जायेंगे।

दूसरों की परवाह करना और उनके सुख दुःख में भागीदार होना–यह प्रो॰ तातेड़ के व्यक्तित्व की प्रमुख विशेषता है। वे एक ऐसे स्नेहपूर्ण वातावरण में पले–पोसे, जिसमें दूसरों की परवाह करना और दूसरों को प्रोत्साहन देना भी शामिल था। अपने बचपन से ही उन्होंने अपने कल्पनाशील मस्तिष्क, शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता और सक्रियता से अपने सम्पर्क में आने वाले सभी व्यक्तियों को प्रभावित किया। कठिन कार्यों को हाथ में लेने की उनकी जन्म जात रूचि है और उनमें दूसरों की भलाई करने की स्वाभाविक प्रवृत्ति है। उम्र के साथ–साथ उनके गुणों का भी विकास होता गया और इन गुणों ने उनको धीरे–धीरे एक उदार–हृदय, साहसी स्वभाव वाले और विभिन्न विषयों में रूचि लेने वाले व्यक्तित्व के रूप में रूपान्तरित कर दिया। उनमें दुर्लभ गुणों का समावेश है इस कारण आस–पास के सम्पूर्ण वातावरण में वे समान मात्रा में आदर प्राप्त करने के पात्र हैं।

प्रो॰ तातेड़ के बारे में कहा जा सकता है कि उनकी ईमानदारी, सादगी, नम्रता, समर्पण, साहस, स्वाभिमान और विद्धता उल्लेखनीय हैं। और हाँ, वे कितने अद्‌भुत हैं। वे वास्तव में न केवल जैन श्वेताम्बर तेरापंथ समाज के, बल्कि सम्पूर्ण मानवजाति के बहुमूल्य रत्न हैं। प्रो॰ तातेड़ के दर्शन को सार–संक्षेप के रूप में निम्न कविता के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता हैः–

"जितना भला कर सको, करो ;
और तुम निश्चित रूप से ऐसा कर सकते हो ;
तुम हर तरीके से ऐसा कर सकते हो,
तुम सब स्थानों पर ऐसा कर सकते हो,
तुम हर समय ऐसा कर सकते हो,
तुम सब लोगों के साथ भलाई कर सकते हो,
और तुम ऐसा करो, जब तक तुम ऐसा कर सको"